P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III* Issue-V* January-2016

''उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों मे अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं में मूल्य अन्तर्निविष्ट (Inculcating Values)

वीरेन्द्र पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक (पूर्व प्राचार्य),
शिक्षा विभाग,
वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय,
आरा (बिहार)

सारांश

वर्तमान अध्ययन उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 12वीं के छात्र एवं छात्राओं का जीवन–मूल्य के प्रति अभिवृत्ति स्तर को ज्ञात करने के लिए किया गया गया है। उक्त अध्ययन में उपकरण के रूप में सद्गुण विकास मापनी मानकीकृत परीक्षण का प्रयोग किया गया। उक्त परीक्षण के प्राप्त परिणाम के आधार पर छात्र एवं छात्राओं के मध्य मध्यमान (Mean), प्रामाणिक विचलन (S.D) तथा सह–सम्बन्ध (Co-relation) ज्ञात किया गया तथा परिणामों का विवेचन भी किया गया। इस अध्ययन में भावी अनुसंधान हेतु सुझाव भी प्रस्तुत किये गये।

मुख्य शब्द : उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, जीवन–मूल्य।

प्रस्तावना

मूल्यों की उपलब्धि से हमारे अभिवत्ति में परिवर्तन होने लगता है अर्थात् सृष्टि के प्रति हमारे दृष्टिकोंण में परिवर्तन हो जाता है। सृष्टि के द्वन्द्वात्मक स्वरूप की रचना गुण–दोष के आधार पर की गई। हानि–लाभ, जय–पराजय मिलन वियोग, सुख–दुःख, जन्म–मरण द्वन्द्वात्मक भाव एक ही वस्तु के दो भिन्न–भिन्न पक्ष का समर्थन करते हैं। सृष्टि में समान रूप से दोनों की आवश्यकता है। एक ही घर में पूजा–कक्ष तथा शौचालय साथ–साथ रहते हैं। दोनों की समान उपयोगिता भी है। परन्तु एक को हम पवित्र और दूसरे को अपवित्र कहते हैं। इसका कारण दृष्टिभेद है। यदि हम उपयोगिता का आधार लेते हैं तो शौचालय उतना ही उपयोगी है, जितना रसोई घर। परन्तु एक को शुभ एवं दूसरे को अशुभ अपने दृष्टिाकेंण के अनुसार कहते हैं।

वस्तुतः कोई वस्तु स्वयं में अच्छी बुरी नहीं होती। मृत्यु अशुभ तब है, जब हमारा कोई मरे, परन्तु जब शत्रु पक्ष का कोई मरता है तो वह शुभ लगता है। अतः अपने अनुसार कोई निष्कर्ष निकालना अनुचित है। नारी यदि किसी के नरक की खान है तो किसी के लिए माता–बहन तथा किसी के लिए लक्ष्मी–दुर्गा की तरह परम पूज्य है। इस प्रकार चिन्तन में परिवर्तन से दृष्टि बदलती है।

प्रत्येक वस्तु का अपने–अपने स्थान पर महत्व है। जहॉ सूई का काम है, वहॉ तलवार निरर्थक है। कैकेयी के क्रोध से ही राम को पुरूषोत्तम बनने का सुअवसर मिला। श्राप के पीछे वरदान छिपा रहता है प्रत्येक वस्तु कारण–कार्य के नियम पर आधारित है। कारणों से अनभिज्ञ होने के कारण हम कार्य की आलोचना करते हैं। यदि कारण ज्ञात हो जाय तो कोई वस्तु अशुभ न लगेगी। सृष्टि में विषमता ही कर्तव्यों की जननी है। एक शिक्षक के लिए अशिक्षित की आवश्यकता होती है। कर्तव्यनिष्ठ एक डॉक्टर को रोगी की तलाश रहती है। अतः इसी आधार पर इस सत्य का अनुभव होता है कि कोई गैर नहीं है। प्रेम का साम्राज्य यहीं से शुरू होता है।

भारतीय संस्कृति मूल्यों से भरी हुयी है। इस संस्कृति में व्रत का आचरण सामाजिक जीवन के सभी रूपों में रहा है। उदाहरण के लिए हरिश्चन्द्र जैसे राजर्षि अपने सत्यादि व्रतों के लिए लोक–विख्यात रहे हैं। नारद, परशुराम,भीष्म तथा हनुमान के ब्रम्हचर्य व्रत जग विख्यात है। ऋषि–मुनियों द्वारा पालित कुछ व्रत जैसे मौनव्रत वानप्रस्थ, अहिंसा,चार्तुमास, परायण, दक्षिणायन व्रत आदि भी ऐसे व्रत रहे हैं, जिनका पालन मृत्यु–समय तक भी दृढ़ता से किया गया। इसी प्रकार समाज में भिन्न–भिन्न अधिकारी, कर्मचारी, विद्यार्थी, अध्यापक, पति–पत्नी सबके अपने व्रत हैं। जैसे अधिकारी में दायित्व को समझना, कर्मचारी में कर्तव्य, विद्यार्थी में स्वाध्याय, अध्यापक मे अध्यापन, पति में पत्नी रक्षण, पत्नी में पतिव्रत आदि उन सबके अपने–अपने व्रत भारतीय संस्कृति में निर्धारित रहे हैं।

हमारी संस्कृति में विद्यमान इन मूल्यों को अपने आचार–विचार में पालन करने पर ही हम भारतीय लोग विश्व को फिर से चरित्र, संस्कार और जीवन जीने की कला का ज्ञान दे सकते हैं। भारत के विश्व गुरूत्व का प्रमुख कारण हमारा सर्वश्रेष्ठ जीवन मूल्य ही रहा है।

वर्तमान समय में स्थित कुछ ऐसी बन गई है कि व्यक्ति जितना अधिक अज्ञानी है, वह अपने को उतना ही अधिक बुद्धिमान प्रदर्शित करना चाहता है। क्या अच्छी बात सुनना उसे पसन्द ही नहीं आता। उपदेश चाहे माता–पिता क हों या विद्वान सन्त महात्माओं का उन्हें सुनना और उनपर आचरण करना वह अपना अपमान समझता है और उल्टे उनका उपहास करता है। अतः वर्तमान शिक्षा प्रणाली भी मूल्यों की स्थापना एवं ज्ञान का उद्देश्य निर्धारित करने में पूरी तरह असफल रही है। अतः हमारे समक्ष महत्वपूर्ण चनौती है कि प्रारम्भिक जीवन–मूल्य जो दिन–प्रतिदिन मिटती जा रही है, उसे कैसे बचाया जा सकता है? अतः नयी पीढ़ी को संस्कारयुक्त शिक्षा देना होगा। सेवा, त्याग एवं समर्पण भाव से शिक्षण कार्य करना होगा। भौतिक उत्थान के साथ–साथ चरित्र निर्माण को प्राथमिकता देनी होगी चूँकि शिक्षा मनुष्य में संस्कार देने की प्रक्रिया है। शिक्षा वस्तुवाचक ही नही, भाववाचक तथा क्रियावाचक भी है। इसे वस्तुवाचक मात्र मानकर आदान–प्रदान अर्थात् क्रय–विक्रय की वस्तु समझना भयंकर भूल है। शिक्षा को वस्तुवाचक बनाने का ही परिणाम है कि आज का मानव दानव का रूप धारण कर चुका है। मानव तो बड़े पुण्य के प्रताप से पैदा होते हैं। राज दशरथ को जहाँ वह पुत्रेष्ठि यज्ञ द्वारा प्राप्त हुआ, वहीं रावण को सवा लाख नाती–पोत के रूप में अनायास ही मिल गया था। आज समस्या मानव बनाने की है। यह मात्र किसी संस्था विशेष से ही सम्भव नहीं है। इसके लिए गर्भावस्था से ही मूल्यों के भाव भरने होंगे। मानव के पिता मनु ने कहा था, 'जन्मना जायते शूद्रों संस्कारेति द्विज उच्चते'। अर्थात् जन्म से सभी दानव या शूद्र होते हैं। संस्कारों से ही ये क्रमशः प्रगति करके द्विज, विप्र अथवा ब्रह्मज्ञानी बनते हैं।

समस्या कथन

'उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के जीवन–मूल्यो के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।'

अध्ययन का उद्देश्य

इस अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं:–

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों का जीवन मूल्य के प्रति अभिवृत्ति स्तर ज्ञात करना।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों का जीवन मूल्य के प्रति अभिवृत्ति लिंगभेद के आधार पर ज्ञान करना।
3. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के जीवन मूल्य के प्रति अभिवृत्ति में सह सम्बन्ध ज्ञात करना।

परिकल्पनाएँ

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत बालक तथा बालिकाओं के मध्य जीवन–मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत बालक एवं बालिकाओं के मध्य जीवन–मूल्यों के कोई सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।

बालक एवं बालिका वर्ग के विद्यार्थियों के जीवन–मूल्यों की तुलना

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 12वीं में अध्ययनरत बालक तथा बालिकाओं के जीवन–मूल्य में अन्तर को जानने के लिए मध्यमानों के बीच मूल्यों का परिकलन किया गया। प्राप्त परिणामों की सार्थकता ज्ञात करने हेतु टी प्राप्तांक ज्ञात किया गया। इन बालक एवं बालिकाओं के मध्य जीवन–मूल्यों का सहसम्बन्ध भी निकाला गया तथा सार्थकता की जाँच भी की गई। उक्त परिणामों की सारणी का प्रदर्शन इस प्रकार है:–

सारणी–1

क्र. सं.	संकेत	जीवन मूल्य	बालक वर्ग		बालिका वर्ग		टी प्राप्तांक	सम्बन्ध मान
			M	SD	M	SD		
1	क	ज्ञानात्मक	5.51	2.0	5.67	1.7	0.60	0.01
2	ख	आर्थिक	1.99	2.1	1.33	1.7	2.44*	0.17
3	ग	सौन्दर्यात्मक	2.57	1.5	2.86	1.7	1.29	0.07
4	घ	देशभक्ति	7.07	1.9	7.03	1.8	0.15	0.23*
5	च	स्वास्थ्य	2.90	1.4	3.25	1.3	1.79	-0.03
6	छ	सामाजिक	4.15	1.7	4.42	1.6	1.14	0.00
7	ज	सामर्थ्य एवं शक्ति	2.56	1.5	2.05	1.3	2.65*	0.13
8	झ	धार्मिक	3.11	1.5	3.33	1.6	1.00	0.03

सकेतः .01 स्तर पर सार्थक **

.05 स्तर पर सार्थक*

परिणाम एवं विवेचन

उक्त सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि जीवन–मूल्यों के आठ आयामों में से छः आयामों जैसे ज्ञानात्मक मूल्य सौन्दर्यात्मक मूल्य देशभक्ति मूल्य, स्वास्थ्य मूल्य, सामाजिक मूल्य तथा धार्मिक मूल्य में बालक एवं बालिकाओं के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है। इसके विपरीत आर्थिक मूल्य में अन्तर .05 स्तर पर सार्थक पाया गया। सामर्थ्य एवं शक्ति मूल्य में भी इन बालक एवं बालिकाओं के मध्य अन्तर .01 स्तर पर सार्थक रूप से पाया गया। इन दोनों मूल्यों (आर्थिक मूल्य तथा सामर्थ्य एवं शक्ति मूल्य) में बालक वर्ग, बालिका वर्ग की तुलना में उच्च मूल्यों से युक्त पाये गये। इसी प्रकार बालिकाओं में भी ज्ञानात्मक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, स्वास्थ्य मूल्य, सामाजिक मूल्य तथा धार्मिक मूल्य बालकों की तुलना में श्रेष्ठ पाये गये, जबकि शेष मूल्यों के लिए कोइ सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

उक्त सारणी में बालक एवं बालिकाओं के मध्य स्वास्थ्य मूल्य का सह–सम्बन्ध ऋणात्मक पाया गया तथा शेष मूल्यों में यह सम्बन्ध धनात्मक पाया गया। देशभक्ति

मूल्य इन दोनों वर्ग के विद्यार्थियों के मध्य 01 स्तर पर सार्थक रूप से सहसम्बन्धित पाया गया। शेष सभी मूल्य किसी भी स्तर पर सार्थक रूप से सह–सम्बन्धित नहीं पाये गये। अतः कहा जा सकता है कि ऊपर वर्णित परिकल्पनाओं को आंशिक रूप से स्वीकृत किया गया।

पारिभाषिक पदों का स्पष्टीकरण

जीवन–मूल्य

विलियम (1963) के अनुसार, ''जीवन–मूल्य वे शक्तिशाली निर्धारक तत्व (Potent Determinant) है जो मानव व्यवहार को निर्दिष्ट करता है तथा उन्हें एक विशिष्ट मर्यादा या तात्पर्य प्रदान करता है।''

वर्मा (1972) के अनुसार, ''मूल्य वह अभिधारणा है जो कि व्यक्ति की भलाई या उन्नति के लिए किसी वस्तु या क्रिया की वांछनीयता को प्रकट करता है। व्यक्ति उन मूल्यों के अनुसार ही व्यवहार करता है जिन्हें वह जीवन में महत्वपूर्ण तथा अनिवार्य मानता है। अतः उन्हें जीवन–मूल्य कहा गया है।''

अभिवृत्ति

गुड (1954) के अनुसार, ''अभिवृत्ति एक मानसिक संवेगात्मक तत्परता की स्थिति है, जिसमें व्यक्ति वातावरण, अपनी आदत एवं अभ्यस्त तरीकों के अनुसार अपनी क्रियाशीलता को प्रकट करता है''।

अध्ययन की आवश्यकता

आज विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्र–छात्राओं के अन्दर जीवन–मूल्य के प्रति अभिवृत्ति में उदासीनता बढ़ती जा रही है। ऐसा लगता है कि वे अपने नैतिक मूल्यों एवं आदर्शों के प्रति उदासोन होतो जा रहे है। जिसमें उनमें दिशाहीनता बढ़ती जा रही है। इन बिन्दुओं को जानने हेतु उक्त अध्ययन की आवश्यकता स्पष्ट हो जाती है।

अध्ययन का परिसीमन

वर्तमान अध्ययन में केवल वाराणसी शहर के कन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं उ0प्र0 माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त विद्यालयों के कक्षा 12वीं में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।

अध्ययन की प्रविधि

वर्तमान अध्ययन में विवरणात्मक सर्वेक्षण प्रविधि का प्रयोग उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 12वीं में अध्ययनरत बालक एवं बालिका वर्ग के विद्यार्थियों में जीवन–मूल्य के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर सम्बन्धी प्रभाव को जानने के लिए किया गया है।

जनसंख्या एवं प्रतिदर्श

वाराणसी नगर में अवस्थित सभी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 12वीं के समग्र विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में मानते हुए प्रतिदर्श के रूप में चार बालक विद्यालय एवं चार बालिका विद्यालयों में यादृच्छिक विधि से 100 बालक और 160 बालिकाओं का चयन किया गया है।

उपकरण

इस अध्ययन के लिए मानकीकृत परीक्षण के रूप में 'सद्गुण विकास मापनी' का प्रयोग किया गया है, जिसमें ज्ञानात्मक मूल्य, आर्थिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, देशभक्ति मूल्य, स्वास्थ्य मूल्य, सामाजिक मूल्य, सामर्थ्य एवं शक्ति मूल्य तथा धार्मिक मूल्य के मापन की व्यवस्था की गई है।

भावी अनुसंधान हेतु सुझाव

इन अनुसंधान क्षेत्रों में शोध कार्य करने हेतु निम्नलिखित सुझाव दिये जा सकते हैंः–

1. वर्तमान अध्ययन का क्षेत्र केवल वाराणसी शहर तक ही सीमित था। इसे मण्डलीय, प्रान्तीय या राज्य स्तर पर उचित अनुसंधान विधि प्रारूप को अपनाते हुए पुनः शेध किया जा सकता है।
2. वर्तमान अध्ययन कक्षा 12वीं में अध्ययनरत विद्यार्थियों पर ही किया गया है। अन्य स्तरों (प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च स्तर) के विद्याार्थियों पर भी उचित अनुसंधान किया जा सकता है।
3. आधुनिकीकरण, तीव्रता जीवन–सतह शिक्षण तकनीकी, प्रशिक्षण प्रविधियों तथा विद्यालयी प्रशासन आदि में भी पर्याप्त अन्तर जानने के लिए भावी अध्ययन किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Good, C.V, and scates,D.E,(1954) :"Methods of Research "Appleton Century, Grafts, Inc, New york
2. Verma, R.P (1972): "Cncept of Value", (Ch.II) in his Ph.D Thesis in Edn., Agra univ., Agra
3. Willlam, J.E.and Biddle, B.J, (Ed) (1963): "Contemporary research on Teacher Effectiveness".